पद ५४ (अष्टक)

अत्रिपुत्रका ब्रह्मरूपका अनामनामका सत्यशक्तिका। आनंदात्मका चिच्छरीरिका। भज तूं माणिका भक्तपालका।।१।। अत्रिनंदना दैत्यनाशना । पद्मलोचना देवरक्षणा । अगाधकीर्तिका धरणिधारका। भज तूं माणिका भक्तपालका।।२।। दंडधारका युग्मनेत्रका। भानुकोटितेज प्रभाधिका। भक्तहत्सरोजाग्रबीजका। भज तूं माणिका भक्तपालका।।३।। निगमस्थापका धर्मपालका। सृष्टिनायका वृष्टिवर्षका। पादसंश्रितालागीं तारका। भज तूं माणिका भक्तपालका ।।४।। त्रिगुणरूपका त्रिगुणहारका। त्रिगुण कारका त्रिगुणभाविका। हरिहरेश तूं लोकनायका। भज तूं माणिका भक्तपालका ।।५।। द्रुहिणरूपका सृष्टिकारका। विष्णुरूपका सृष्टिपालका। रुद्ररूप तूं लोकहारका भज तूं माणिका भक्तपालका ।।।।६।। द्वैतहारका भवविदारका। नतजनस्वपादाब्जदायका। शिवजीवैक्यत्व प्रदायका। भज तूं माणिका भक्तपालका।।७।। भुक्ति मुक्ति चित्सुखाब्धि दायका। अनिर्वाच्यका आद्यरूपका। मनोहराख्य नैजदासरक्षका। भज तूं माणिका भक्तपालका।।८।।